International Journal of Creative Research and Innovation (IJCRI)
Vol-5, Issue-11, 2020 | ISSN: 2581-6829, http://www.edusanchar.com

''शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि का प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन''

डॉ. श्रीकान्त भारतीय
एसोसिएट प्रोफेसर
जवाहर लाल नेहरू टी.टी. महाविद्यालय
सकतपुरा, कोटा

परमेश्वर गुप्ता
शोधार्थी,
केरियर पाइन्ट यूनिवर्सिटी, कोटा

Key word:– कार्य सन्तुष्टि, प्रशिक्षणार्थी, शैक्षिक उपलब्धि।

सारांश –

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य, सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि का प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना था। शोधकर्ता ने इसके लिए हाड़ौती के 30 शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों जिनमें 150 शहरी क्षेत्र एवं 150 ग्रामीण क्षेत्र से न्यादर्श के रूप में लिये गये तथा कुल 600 प्रशिक्षणार्थी भी अध्ययन में सम्मिलित किये गये। सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि जाँचने के लिए डॉ. प्रमोद कुमार और डी.एन. मूथा द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण (कार्य सन्तुष्टि प्रश्नावली) का प्रयोग किया गया। शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि एवं सहसम्बन्ध द्वारा आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। निष्कर्ष में पाया कि कार्य सन्तुष्टि का प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ना पाया गया। अर्थात् सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि का प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

1.1 प्रस्तावना –

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो अच्छे आचरण के साथ सुखमयी जीवन को जीना भी सिखाती है जिसमें शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। इन भावी शिक्षकों को तैयार करने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों द्वारा इन भावी शिक्षकों को पूर्व ज्ञान, शैक्षिक कौशल तथा शैक्षिक योग्यता प्रदान की जाती है।

जॉन एडम्स के अनुसार, ''शिक्षक को मनुष्य का निर्माणकर्ता माना जाता है। शिक्षक वह धुरी है जिसके चारों ओर पूर्ण शैक्षणिक व्यवस्था घूमती है।''

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के सहायक आचार्य सदैव ही समाज में अपने दायित्वों को लेकर सजग रहते हुए कार्य करते है। ये सदैव ही राष्ट्र निर्माण में सहयोगी रहे है। वे तभी किसी कार्य में सहयोग कर सकते है जब वह अपने कार्य स्थल, कार्य व व्यक्तियों से संतुष्ट हो, कार्य सन्तुष्टि का दूसरा नाम कृत्य संतोष है।

कार्य संतोष से अभिप्राय कर्मचारी के कार्य के सभी तत्व की सृष्टि से कार्य में ली जाने वाली रूचि से है जिससे वह अपने कार्य में निरन्तर प्रगति करता है और बिना किसी अरूचि के अपने कार्य को अच्छे ढंग से पूरा करता है।

''किसी व्यवसाय में कार्यरत व्यक्ति उस सीमा तक अच्छा कार्य करेगा, जिस सीमा तक वह अपने व्यवसाय में संतुष्ट होगा, अगर कोई व्यक्ति अपने व्यवसाय या कार्यों में पूर्णरूपेण सन्तुष्ट है तो उसके कार्य करने की क्षमता और रूचियाँ भी बढ़ेगी।'' **– आशा हिंगड़**

कार्य सन्तुष्टि कई तत्वों से निर्धारित की जा सकती है जिनमें आर्थिक सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा, सम्मान व आदर, सहयोगी एवं अधिकारियों से संबंध, संस्था का वातावरण, भविष्य की सुरक्षा, वेतन, पदोन्नती जैसे कारकों को सम्मिलित कर सकते है।

कार्य सन्तुष्टि के माध्यम से ही शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के सहायक आचार्यों को शैक्षिक उपलब्धियाँ प्राप्त होती है।

शैक्षिक का अर्थ होता है ज्ञान और उपलब्धि का अर्थ होता है प्राप्ति। अर्थात् शैक्षिक उपलब्धि का तात्पर्य है ज्ञान प्राप्ति अथवा ज्ञान प्राप्त करना।

स्किनर के अनुसार, ''शैक्षिक कार्य का अंतिम परिणाम ही शैक्षिक उपलब्धि है जो विद्यार्थियों के सीखने के विषय में अंतिम जानकारी प्रदान करती है।''

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि का प्रभाव देखने का प्रयास किया गया है।

1.2 शोध अध्ययन का औचित्य –

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत सहायक आचार्य अपने कार्य से सन्तुष्ट नहीं है तो उसका सीधा–सीधा प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ सकता है अतः उन कारणों का पता लगाकर अपेक्षित सुझावों का प्रयोग किया जायेगा।

इस शोध अध्ययन से प्रशासकों को अपने सहायक आचार्यों की असन्तुष्टि के कारणों की जानकारी प्राप्त होगी तो उन्हें दूर करने का भी प्रयास किया जा सकेगा।

सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि का सम्बन्ध प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से होता है। अतः इस अध्ययन से शैक्षिक उपलब्धि के विकास हेतु भी प्रयास किया जा सकेगा। साथ ही जो प्रशिक्षणार्थी भविष्य में सहायक आचार्य बनना चाहते है उन्हें भी कार्य सन्तुष्टि के बारे में जानकारी मिल सकेगी।

1.3 उद्देश्य –

1. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन करना।
2. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के पुरुष एवं महिला सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन करना।
3. शहरी एवं ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन करना।
4. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के पुरुष एवं महिला सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. शहरी एवं ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि एवं प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

1.4 परिकल्पनाएँ –

1. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के पुरुष एवं महिला सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. शहरी एवं ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि एवं प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध होता है।

1.5 सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन –

1. **Robert, Hoppie** (1960),
   "A 27 Year follow up job satisfaction of employed adult."
2. **Warinimont, P.I.** (1966),
   "Intrinsic and extrinsic factors Affect job satisfaction."
3. **सत्यनारायण, साथी** (1970),
   ''माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि और दक्षता का अध्ययन।''
4. **लवनिया, के.वी.** (1974),
   "A study of job satisfaction among school teachers."
5. **मारमन, ऑस्कर टेराल्ड** (2000),
   ''विशेष शिक्षा के अध्यापकों के कार्य सम्बन्धी चरों और कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन''
6. **लाल, रोशनी शेरगिल, सिंह, सबरजीत** (2012),
   "A comparative study of job satisfaction and attitude towards education among male and female teachers of degree college."
7. **शर्मा, चंचल** (2013),
   ''शैक्षिक उपलब्धि पर व्यक्तित्व आत्म सम्प्रत्यय के सम्बन्ध में उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।''
8. **जोशी, भारत** (2015),
   ''माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।''

9. **वर्मा, नितिन कुमार** (2016),
''कानपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध शिक्षक–शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि के बीस विमाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन।''

10. **कुमार, राजेन्द्र** (2018) ने,
''तृतीय श्रेणी अध्यापकों की अपने व्यवसाय में अभिरूचि एवं संतुष्टि का अध्ययन''

11. **सिंह, बलवान** (2018),
''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन''

इत्यादि शोध कार्यों का अध्ययन करने से ज्ञात हुआ कि इन अध्ययनों में कोटा विश्वविद्यालय से सम्बद्धता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि एवं प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में अभी तक अध्ययन नहीं किया गया। अतः इसी नवीन प्रकार की समस्या के अध्ययन की आवश्यकता शोधकर्ता द्वारा अनुभव की गई।

1.6 शोध विधि –

शोधकर्ता द्वारा अपने अनुसंधान कार्य के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

1.7 जनसंख्या एवं न्यादर्श –

शोध अध्ययन हेतु उन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों को लिया गया है जो हाड़ौती क्षेत्र में कार्यरत है।

सारणी 1.1 न्यादर्श

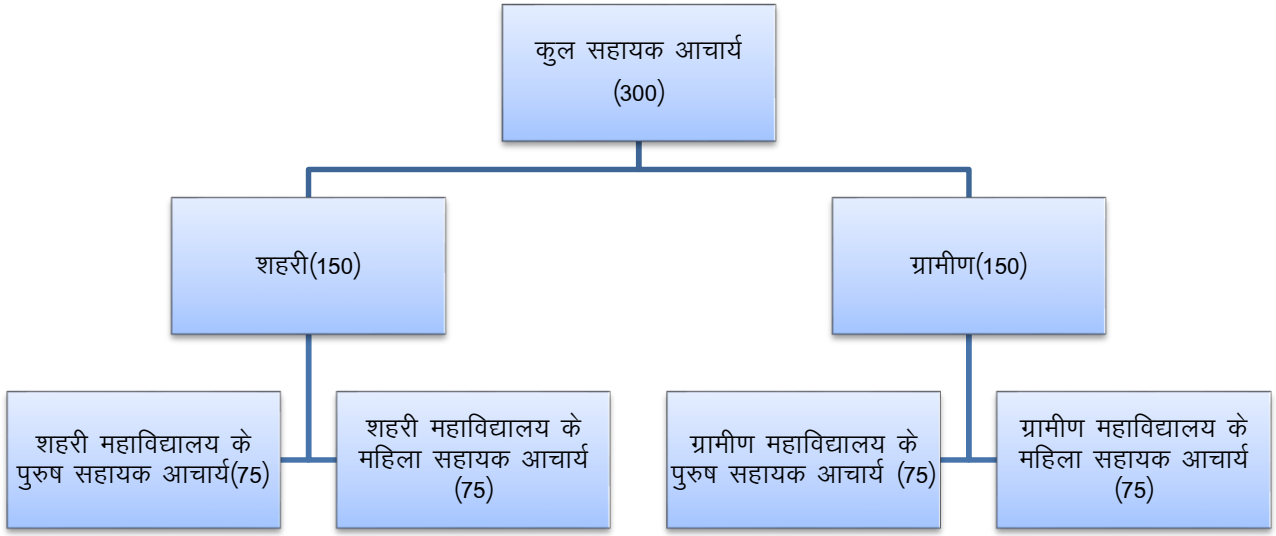

कुल प्रशिक्षणार्थी – 600
शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय – 30

1.8 उपकरण –

शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत अध्ययन से सम्बन्धित निम्न शोध उपकरण का प्रयोग किया गया हैं –

1. कार्य सन्तुष्टि प्रश्नावली – मानकीकृत
डॉ. प्रमोद कुमार एवं डी.एन. मूथा।
2. शैक्षिक उपलब्धि के लिए बी.एड. परीक्षा–2019 प्रथम वर्ष का परीक्षा परिणाम।

1.9 सांख्यिकी –

आँकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या के लिए वर्णात्मक एवं निष्कर्षात्मक सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

वर्णात्मक सांख्यिकी प्रविधि – इसमें मध्यमान एवं मानक विचलन का प्रयोग किया गया है।

निष्कर्षात्मक सांख्यिकी प्रविधि – इसमें टी–परीक्षण तथा सहसम्बन्ध गुणांक प्रविधि का प्रयोग किया गया।

1.10 परिसीमन –

1. हाड़ौती के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में स्थित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों का चयन किया गया है।

2. प्रत्येक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों से कम से कम 10 सहायक आचार्यों का चयन किया गया है।
3. शोध कार्य में न्यूनतम अनुभव 2 वर्ष रखा गया है।
4. बी.एस.टी.सी., एम.एड., शिक्षाशास्त्री के महाविद्यालयों का चयन नहीं किया गया है।

1.11 परिभाषीकरण –

1. **कार्य सन्तुष्टि** – कर्मचारी के व्यवसाय से सम्बन्धित भिन्न–भिन्न कारकों के प्रति उसकी मनोवृत्ति।
2. **सहायक आचार्य** – महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में शिक्षक।
3. **शैक्षिक उपलब्धि** – शिक्षा के क्षेत्र में स्थापित ज्ञान या कौशल जो परीक्षा के माध्यम से प्राप्त करता है।
4. **प्रशिक्षणार्थी** – शिक्षा महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थी।

1.12 प्रदत्तों का विश्लेषण व व्याख्या –

1. **शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के पुरुष एवं महिला सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।**

सारणी 1.2

क्र.स.	चर	सहायक आचार्य वर्ग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी– मूल्य	सार्थकता स्तर
1.	कार्य सन्तुष्टि	पुरुष	150	18.20	4.75	0.60	NS
2.		महिला	150	18.53	4.73		

df 298 के लिए 0.01 का मान = 2.59
df 298 के लिए 0.05 का मान = 1.97

तालिका से स्पष्ट है कि पुरुष सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि का माध्य 18.20 एवं महिला सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि का माध्य 18.53 प्राप्त हुआ इसी प्रकार इनका मानक विचलन क्रमशः 4.75 एवं 4.73 प्राप्त हुआ।

पुरुष एवं महिला सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि का टी मूल्य 0.60 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 सार्थकता स्तर के सारणीयन टी मूल्य 1.97 से कम है।

अतः परिकल्पना 1 ''शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के पुरुष एवं महिला सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।'' को स्वीकृत किया जाता है।

2. **शहरी एवं ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।**

सारणी 1.3

क्र.स.	चर	सहायक आचार्य वर्ग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी– मूल्य	सार्थकता स्तर
1.	कार्य सन्तुष्टि	ग्रामीण	150	18.77	4.60	2.01	0.05 S
2.		शहरी	150	17.96	4.85		

df 298 के लिए 0.01 का मान = 2.59
df 298 के लिए 0.05 का मान = 1.97

तालिका से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र के सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि का माध्य 18.77 एवं शहरी क्षेत्र के सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि का माध्य 17.96 प्राप्त हुआ इसी प्रकार इनका मानक विचलन क्रमशः 4.60 एवं 4.85 प्राप्त हुआ।

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि का टी मूल्य 2.01 प्राप्त हुआ जो कि 0. 05 सार्थकता स्तर के सारणीयन टी मूल्य 1.97 से अधिक है।

अतः परिकल्पना 2 ''शहरी एवं ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।'' को अस्वीकृत किया जाता है।

3. **शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि एवं प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध होता है।**

सारणी 1.4

चर		सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता स्तर
कार्य सन्तुष्टि	शैक्षिक उपलब्धि	+0.429	0.01 S

df 298 के लिए 0.01 का मान = 0.148

df 298 के लिए 0.05 का मान = 0.112

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि व प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक + 0.429 प्राप्त हुआ जो कि 99% विश्वास स्तर df = 298 सार्थकता स्तर 0.01 पर सारणीयन मूल्य 0.148 से बहुत अधिक है।

अतः परिकल्पना 3 ''शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि एवं प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध होता है।'' को स्वीकृत किया जाता है।

1.13 निष्कर्ष –

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के पुरुष एवं महिला सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है जबकि शहरी क्षेत्र के शिक्षा महाविद्यालयों के सहायक आचार्यो का कार्य सन्तुष्टि स्तर ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षा महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों से अधिक होता है। सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सामान्य स्तरीय धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया है। सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि का स्तर औसत दर्जे का प्राप्त हुआ है।

1.14 विवेचना –

प्रस्तुत शोध में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत सहायक आचार्यों की कार्य सन्तुष्टि का स्तर औसत दर्जे का पाया गया है क्योंकि अनेक शिक्षा महाविद्यालयों में देय वेतन, सुरक्षा एवं पदोन्नति के अवसर संतोषजनक नहीं है और ना ही जॉब सुरक्षित है क्योंकि ऐसी कोई नीति अभी तक नहीं बन पाई है। वहीं शहरी क्षेत्र के सहायक आचार्य अधिक संतुष्ट पाये गये क्योंकि उनको ग्रामीण क्षेत्र की तुलना में अधिक सुविधाएँ मिल रही है। कार्य सन्तुष्टि का प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया है क्योंकि सहायक आचार्य पूर्ण संतुष्ट होने पर वह निरन्तर अपने प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उन्नति हेतु सार्थक प्रयास करेगा परन्तु अंसतुष्ट होने पर वह अपनी समस्याओं को हल करने में ही अपना अधिकांश समय एवं श्रम खर्च कर देता है।

1.15 शैक्षिक निहितार्थ –

1. सहायक आचार्यों के वेतन, सुरक्षा, सहयोग एवं पदोन्नति आदि के बारे में प्रबन्धन वर्ग को सार्थक प्रयास करना चाहिए।
2. सहायक आचार्यों को अपने कार्य सन्तुष्टि स्तर में वृद्धि करते हुए प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में गुणात्मक अभिवृद्धि का प्रयास करना चाहिए।
3. शिक्षक शिक्षा के सहायक आचार्य प्रशिक्षणार्थियों को स्वयं सीखने हेतु प्रोत्साहित कर सकेंगे।
4. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थी की शैक्षिक उपलबिध की जानकारी होने पर इसकी उन्नति के प्रयास किये जा सकेंगे।

1.16 सुझाव –

1. महाविद्यालयी शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक या उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलबिध पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर कला वर्ग, विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. प्राथमिक/माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव का अध्ययन करना।

1.17 संदर्भ ग्रंथ सूची

Books :-

1. शर्मा, आर.ए. (2005), शिक्षा अनुसंधान, मेरठ, आर.लाल बुक डिपो।

2. सिंह, अरूण कुमार (2006), मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ। नई दिल्ली : मोतीलाल बनारसी दास।
3. श्रीवास्तव, डी.एन. (2005), अनुसंधान विधियाँ, आगरा, साहित्य प्रकाशन।
4. पाठक, पी.डी. (1994), शिक्षा मनोविज्ञान आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।

Journals -

- Indian Educational Abstracts July 2003, 2004, 2006
- भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, जनवरी–जून 2010, 2014, जुलाई–दिसम्बर 2013, 2016, 2017
- अन्वेशिका – सितम्बर–दिसम्बर–2015 NCTE नई दिल्ली volume 10, Number-03
- Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language Dec,-Jan-2018 Vol-5/25
- International Research Journal of Management sociology & Humanities (online) vol-7, issue-1 Year-2016

Surveys -

- Buch, M.B. (1983-1988) : Fourth Survey of Research in Education, New Delhi Vol.-I, Vol. II, NCERT.

Weblography -

- www.shodhganga.com
- www.psychology.org.in
- www.lib.umd.edu.
- www.dissertation.com
- www.springer.link.com
- www.ncert journals.com
- www.teachereducation.com
- www.echetana.com